राजू और शब्बो की घमासान चुदाई-2

“शब्बो रश्मि के पाई आई तो रश्मि ने उससे पूरी बात पूछी कि उन दोनों की चुदाई कैसे शुरु हुई। शब्बो हिचकचाते हुए शुरु से आखिर तक की बात विस्तार से बताने लगी। ...”

Story By: एक्स मैन (xmansdream)
Posted: Tuesday, August 2nd, 2016
Categories: फोन सेक्स चैट
Online version: राजू और शब्बो की घमासान चुदाई-2

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

राजू और शब्बो की घमासान चुदाई-2

अब तक आपने पढ़ा कि रश्मि ने देखा कि उसकी नौकरानी शब्बो ड्राईवर के साथ गैराज में चुदाई करवा रही थी और रश्मि के देखने के बाद भी राजू ड्राईवर ने चुदाई जारी रखी तथा बाद में रश्मि को भी अपना लौड़ा दिखा दिया।

अब आगे..

रश्मि राजू की हिमाक़त पर हैरान भी थी कि उसे देखने के बाद भी उसने अपनी हरक़त बन्द नहीं की। इतना ही नहीं बाद में नंगा ही उसके सामने खड़ा हो गया। अनायास ही रश्मि को राजू का मोटा लण्ड याद आ गया। रश्मि की साँसें थोड़ी तेज़ हो गईं।

इतने में शब्बो चाय लेकर आ गई और रश्मि के विचारों का सिलसिला टूट गया।
उसे चाय देकर शब्बो भी वहीं नीचे बैठ गई।

अड़तीस साल की रश्मि का वैसे तो एक भरा-पूरा परिवार था। रुपये-पैसे की कोई कमी नहीं थी.. किन्तु पति शुरू से ही कारोबार के सिलसिले में अधिकतर बाहर रहते थे। ऐसे में जब बेटा भी अपनी इन्जीनियरिंग की पढ़ाई के लिए होस्टल चला गया.. तो अकेलापन काटने के लिए क़रीब चार-पाँच साल पहले वो शब्बो को अपने मायके से ले आई।

कमसिन उम्र की शब्बो उसके मायके के पास रहती थी। वैसे नाम उसका शबनम था.. पर सब उसे शब्बो ही बुलाते थे। शब्बो की माँ मर चुकी थी और अकेला बाप तीन जवान होती लड़कियों का बोझ नहीं ढो पा रहा था।
तीन बहनों में सबसे छोटी और चुलबुली शब्बो रश्मि से बहुत हिली-मिली थी। अपनी मदद के लिए रश्मि उसे अपने साथ ले आई। अब वही उसके अकेलेपन का सहारा थी। घर

के काम-काज़ के साथ वो प्राइवेट पढ़ाई भी कर रही थी।

रश्मि के यहाँ रहते हुए वो एक बच्ची से सुन्दर किशोरी कब बन गई.. रश्मि को पता ही नहीं चला। उसकी जवानी काफ़ी गदरा गई थी। छातियों के उभार और नितम्बों का आकार अब लोगों का ध्यान खींचने लगा था। लेकिन रश्मि के लिए तो वो एक चुलबुली बच्ची ही थी।

राजेन्द्र सिंह उनका ड्राईवर था.. जिसे सब राजू बुलाते थे.. बंगले के आउट हाउस में रहता था। अपने पति के दोस्त रमेश की सिफ़ारिश पर उसने राजू को छ : महिने पहले ही नौकरी पर रखा था। चौबीस-पच्चीस साल का राजू वैसे तो बहुत शालीन था। बंगले की रख-रखाव और बाज़ार से सौदा लाना उसके काम थे.. जिसे वो ईमानदारी से करता था।

लेकिन आज उसका ये रूप सामने आने के बाद से रश्मि हैरान थी।

और शब्बो ?

उसे तो वो बच्ची समझ रही थी। लेकिन आज गैराज़ की टेबल पर वो एकदम खेली-खाई औरत जैसा बर्ताव कर रही थी। जिस बेशर्मी से वो चुदाई का मज़ा ले रही थी उससे साफ़ ज़ाहिर था कि वासना का ये खेल उसके लिए नया नहीं था।

'कब से चल रहा हैं ये सब ?'
रश्मि ने पूछा तो शब्बो की चाय उसके हलक में ही रह गई।

'जी.. आज ही !' शब्बो ने बा-मुश्किल चाय निगलते हुए कहा।
'मुझे क्या बच्ची समझ रखा है ?' रश्मि ने मुस्कुराते हुए पूछा।

'टेबल पर तेरे रंग-ढंग देख कर कोई बच्चा भी कह सकता हैं कि राजू ने तुझे ये खेल बहुत

पहले ही सिखा दिया है, तुझे पूरी औरत बना दिया है.. बता कैसे शुरू हुआ ये सब ?' रश्मि के गुस्से पर अब जिज्ञासा हावी होती जा रही थी।
'जी वो.. जी वो..'

शब्बो हिचकिचाई तो रश्मि बोली- अरे डर मत.. मैं तुझसे नाराज़ नहीं होऊँगी।
रश्मि ने कुछ प्यार से कहा तो शब्बो का हौसला कुछ बढ़ा।

'दीदी.. ये जब से आया था ना.. मुझे घूरता था.. मुझसे बात करने की कोशिश करता रहता था। पहले तो मैंने उससे ज्यादा बात नहीं की.. लेकिन साथ-साथ काम करते-करते थोड़ी बहुत बातें होने लगीं और जब बातें होने लगी तो धीरे-धीरे वो चुटकुले सुनाने लगा। फ़िर उसके चुटकुले गंदे होते गए, अश्लील इशारे भी करने लगा..' शब्बो ने बताया।

शब्बो ने रश्मि की ओर देखा, उसकी आँखों में गुस्से की जगह जिज्ञासा के भाव देख कर शब्बो को तसल्ली हुई और वो खुल कर बताने लगी- पहले पहले तो मुझे अजीब सा लगता था.. लेकिन धीरे-धीरे उसके मज़ाक मेरे जवान होते मन को अच्छे लगने लगे। वो जब गंदी बातें करता.. तो मेरे तन में एक फ़ुरफ़ुरी सी होती और मैं अन्दर से भीग जाती थी।

शब्बो की स्वीकारोक्ति सुन कर रश्मि के दिल में कुछ हलचल सी हुई।

शब्बो ने आगे बताया-
एक दिन राजू बाज़ार से सामान लेकर आया.. तो बताया कि वो फ़िश मार्केट से काफ़ी बड़ी मछली लाया था। मैंने उससे बताने के लिए कहा.. तो वो बोला कि ऐसे नहीं.. ऐसी मछली तुमने आज तक नहीं देखी होगी। पहले आँखें बन्द करो फ़िर दिखाऊँगा।
उसने मुझे कुर्सी पर बिठाया और मैंने आँख बन्द की और उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया। कुछ क्षणों में उसने मेरे हाथ में एक बहुत बड़ी.. मोटी-ताज़ी मछली थमा दी।
लेकिन वो कुछ नई तरह की मछली थी। उसकी खाल पर काँटे नहीं थे और आम मछली से

ज्यादा कड़क थी। मैंने जैसे ही उसे देखने को आँखें खोलनी चाही.. राजू ने हाथ से मेरी आँखें बन्द कर दीं.. और बोला कि इतनी होशियार हो तो हाथों से टटोल कर बताओ.. कौन सी मच्छी है ?

मैंने अपना हाथ मछली पर फ़िराया। लेकिन मैं पहचान नहीं पाई। उसका मुँह वगैरह दोनों हाथों से टटोल लिए पर मुझे कोई सुराग नहीं मिला।
मछली का पिछला हिस्सा राजू ने पकड़ रखा था इसलिए में उसकी पूंछ वगैरह नहीं टटोल पाई। एक और बात दीदी.. जैसे-जैसे मैं मछली को टटोल रही थी.. वो मेरे हाथों में और बड़ी व कड़क हो गई थी।
मैं मछली की गन्ध से उसे पहचान लेती हूँ इसलिए उसे सूंघने लगी। जब उसे नाक से लगाया.. तो उसमें किसी जानी-पहचानी मछली की गन्ध नहीं थी।
ध्यान से सूंघा तो उसमें राजू के पसीने की गन्ध सी आ रही थी।

तभी राजू ने मेरी आँखों पर से हाथ हटाया और मैंने देखा कि मेरे हाथ में कोई मछली नहीं थी बल्कि राजू का.. 'वो' था।
'वो क्या ?' रश्मि ने उसे छेड़ा।
'वो' ही दीदी.. आपको पता ही है ना कि लड़कों का..' शब्बो शरमा गई।
'मुझे तो पता है.. पर मैं देखना चाहती हूँ कि तुझे क्या क्या पता है ?' रश्मि ने फ़िर से छेड़ा।
'उस हरामी ने सब कुछ सिखा दिया।' शब्बो ज़ोर से बुदाबुदाई।
'फ़िर बता उसे क्या कहते हैं ?'

रश्मि को भी जैसे रोमांच हो आया, अचानक उसे उन बातों में रस आने लगा।
शब्बो की आंखें शर्म से ज़मीन में गड़ गईं।

कुछ देर के मौन के बाद बोली- उसको लण्ड बोलते हैं ना ? राजू उसको लौड़ा भी बोलता

है।’

रश्मि की सांसें जैसे रुक गईं, शब्बो के मासूम मुँह से ऐसे शब्द सुन कर उसके बदन में सनसनी सी दौड़ने लगी।
‘हूँऽऽ फ़िर ?’
रश्मि ने बात आगे बढ़ाने कि गरज़ से पूछा।

‘फ़िर क्या.. इतना बड़ा लौड़..आ.. मेरा मतलब वो.. देख कर मुझे एक झटका लगा। मैंने घबरा कर उसको छोड़ा और उससे दूर हट गई। राजू ने ज़ोर का ठहाका लगाया और मुझे दिखा-दिखा कर हिलाता रहा।
मुझे थोड़ा डर लगा.. मेरी आँखों में आँसू आ गए। ये देख कर राजू ने मज़ाक बन्द कर दिया और जल्दी से अपना ‘वो’ पैण्ट के अन्दर डाल दिया। फ़िर ‘सॉरी’ बोल कर रसोई से चला गया।
उस दिन मैंने तय कर लिया था कि अब मैं उससे कभी नहीं बोलूंगी। दो-तीन दिन मैं बोली भी नहीं.. रसोई के काम के लिए बोलना भी पड़ता.. तो उसकी ओर नहीं देखती थी।
मेरी बेरुख़ी देख.. वो भी मुझसे बोलने की हिम्मत नहीं कर पाया।’

‘फिर ?’
‘फिर एक हफ़्ते भर बाद ही.. मैं उसे और उसके मज़ाक को मिस करने लगी। वो ज्यादा नहीं बोलता.. तब मुझे अच्छा नहीं लगता। इसलिए एक दिन जब वो बाज़ार से सामान लेकर आया तो मैंने उससे बात करने कि गर्ज़ से पूछा कि आजकल तुम बाज़ार से मछली नहीं लाते ? तो वो बोला कि किसी को पसन्द नहीं है.. इसलिए नहीं लाता।’

‘हम्म..’

‘दीदी.. फिर मैं उसके पास गई और बोली कि किसने कहा.. मुझे तो पसन्द है.. इस पर वो

मुस्कुराया और बोला कि ठीक है.. कल ले आऊंगा।'
'फिर..'
'फिर..इतने दिनों बाद राजू के चेहरे पर मुस्कान देख कर मुझे अच्छा लगा। मुझे पता नहीं क्या सूझा.. मैं उसके बिल्कुल करीब गई और पैण्ट के ऊपर से उसका लण्ड पकड़ लिया और..'
'और.. ?'
'और.. मैंने उसके लण्ड को रगड़ते हुए कहा कि राजू साहब.. मुझे ये मछली चाहिए।'

रश्मि की साँसें तेज होने लगीं और वो उत्कंठा से आगे का मंजर जानने के लिए आँखें शब्बो की तरफ किए बैठी थी।

'दीदी.. राजू का लण्ड मेरे हाथ के नीचे फ़ूलने लगा। उसको शायद यक़ीन नहीं हो रहा था.. कि ये मैं कर रही हूँ। यकीन तो मुझे भी नहीं था कि मैं ये कर रही हूँ.. पर ना जाने क्यों मैं अपना हाथ नहीं हटा पाई।'
'ओह्ह.. फिर.. ?'

'राजू वैसे ही बुत बना खड़ा था। मानो उसे डर था कि अग़र वो हिला तो कहीं मैं अपना इरादा ना बदल दूँ। वो मुझे देखे जा रहा था कि मैंने उसके पैण्ट की चैन खोल के हाथ अन्दर सरका दिया..' शब्बो बोलते-बोलते रुक गई।

वो सोचने लगी कि उसकी इस बेशर्म हरकत पर रश्मि की ना जाने क्या प्रतिक्रिया होगी। वो चुप हो कर ज़मीन को ताकने लगी।
रश्मि को शब्बो की बेहयाई पर हालांकि झटका ज़रूर लगा था लेकिन अब उसे बातें सुनने में एक अज़ीब सा मज़ा आ रहा था।

शब्बो जब राजू के लण्ड के बारे में बता रही थी.. तब रश्मि की आँखों के सामने राजू का

गठीला.. नंगा ज़िस्म तैर गया था और उसके अंगों में एक फ़ुरफ़ुरी सी हो रही थी।

'फ़िर क्या हुआ ?' उत्तेजना मिश्रित जिज्ञासा से उसने पूछा।
'फ़िर..' शब्बो उसकी आवाज़ में जिज्ञासा को भाँप कर राहत महसूस करने लगी।

'फ़िर राजू ने मुझसे पूछा कि ये मछली खाओगी ? मुझे उसकी बात का मतलब तो समझ नहीं आया लेकिन मैंने 'हाँ' में सिर हिला दिया।
इस पर राजू ने मुझे पास पड़ी एक चेयर पर बिठाया और खुद मेरे सामने खड़ा हो गया। मैं कुछ समझ पाती इसके पहले उसने अपना पैण्ट खोल के नीचे खिसका दिया। अब उसका लण्ड ठीक मेरे मुँह के सामने था। उसने मेरा हाथ पकड़ कर अपना लण्ड पकड़ाया। इस बार मैं डरी नहीं। उसका लण्ड मुट्ठी में ले कर मसलने लगी।'

शब्बो रश्मि की ओर देखने लगी, रश्मि पर उत्तेजना हावी होती जा रही थी, उसका चेहरा तमतमाने लगा था।

शब्बो ने आगे बताया- दीदी.. सच कहूँ तो मेरी हालत बहुत खराब हो गई थी। मैं अन्दर तक भीग गई थी। तभी राजू बोला कि अब खाओ मछली.. मैंने पूछा कैसे.. तो उसने बताया कि पहले मैं उसके लण्ड को किस करूँ।
मुझे थोड़ा अज़ीब लगा.. पर मैं लण्ड को किस करने लगी.. फ़िर वो बोला कि अब इसे ऐसे चूसो जैसे तुम आइसक्रीम खाती हो.. मैंने मना कर दिया।
तो वो बोला कि अरे करके तो देखो.. कितना मज़ा आता है।
उसके थोड़ा ज़ोर देने पर मैंने उसका लण्ड मुँह में ले लिया और चूसने लगी। पहले तो थोड़ा गंदा लगा.. लेकिन फ़िर मज़ा आने लगा। मेरे नीचे एक मीठी सनसनी होने लगी, मैं अब ज़ोर-ज़ोर से चूसने लगी।
राजू को मज़ा आने लगा, वो मुझसे मिन्नतें करने लगा कि मैं और ज़ोर से चूसूँ।

मैं काफ़ी देर तक उसका लण्ड चूसती-चाटती रही कि अचानक उसने अपना लण्ड मेरे मुँह से बाहर खींच लिया और बोला तू भी तो कपड़े उतार.. तुझे नंगी देखना है।'

शब्बो की यह बात सुनकर रश्मि को एक बार फिर राजू का लौड़ा दिखने लगा था।

'यह सुन कर मानों मेरी साँसें रुक गईं। हट हरामी.. कह कर मैं कुर्सी से खड़ी हुई तो राजू ने मुझे बाँहों में जकड़ लिया। मैं छूटने के लिए कसमसाई तो राजू ने मेरे होंठों पर अपने होंठ रख दिए और उन्हें चूमने लगा।
उसके चूमने में जैसे कोई जादू था। एक-दो क्षणों में.. मैं अपना सारा विरोध भूल कर राजू से लिपट गई और उसे चूमने लगी। मैं राजू के एक एक चुम्बन के साथ आनन्द के भँवर में गोते लगाने लगी। राजू मेरे होंठों को.. मेरे गालों को.. मेरी गर्दन और मेरे कन्धों को चूमता-चूसता हुआ अपने हाथों से मेरे शरीर को सहलाने लगा।'

ये सब बताते-बताते शब्बो की साँसें फ़िर फूलने लगीं। रश्मि को लग गया कि पहले मिलन को याद कर शब्बो फिर से गर्म हो रही थी।
ख़ुद रश्मि की हालत खराब हो रही थी। जिस बेबाकी से कमसिन शब्बो अपने यार के साथ मौज-मस्ती का बयान कर रही थी.. उसे सुन कर रश्मि का शरीर भी मस्ती से भरने लगा था। रश्मि को अपनी चूत में से भी पानी छूटता महसूस हुआ।

साथियो, वासना का यह मंजर रश्मि को किस ओर ले जाएगा.. इसका अंदाजा करना अभी थोड़ा मुश्किल है पर धैर्य रखिए मैं सब बताऊँगा।

अन्तर्वासना पर मेरे साथ बने रहिए।

अपने विचार मुझे जरूर ईमेल कीजिएगा.. मुझे इन्तजार रहेगा।
कहानी जारी है।

xmansdream@gmail.com

Other stories you may be interested in

साली ने घरवाली का सुख दिया

मेरी पिछली कहानी मेरी पहली गांड की चुदाई पड़ोसी अंकल के साथ आपने पढ़ी. मैं आज एक और नई कहानी के साथ उपस्थित हूँ, आशा करता हूँ कि मेरी कहानी आप लोगों को ज़रूर पसंद आएगी, आज मैं मेरी और […]

Full Story >>>

प्यार की शुरुआत या वासना-1

सभी पाठकों को राघव का नमस्कार ! यह मेरी पहली कहानी है जो मैं आप लोगों से साझा कर रहा हूँ. मेरा प्लेसमेंट बी टेक थर्ड ईयर में यहीं गुड़गाँव की एक कंपनी में हो गया था, ये मेरे कॉलेज का […]

Full Story >>>

मम्मीजी आने वाली हैं-5

स्वाति भाभी अब कुछ देर तो ऐसे ही अपनी चूत से मेरे लण्ड पर प्रेमरस की बारिश सी करती रही फिर धीरे धीरे उसके हाथ पैरो की पकड़ ढीली हो गयी। अपने सारे काम ज्वार को मेरे लण्ड पर उगलने […]

Full Story >>>

कमसिन पड़ोसन की सील तोड़ चुदाई

दोस्तो, मेरा नाम संजय गुप्ता है मेरी उम्र कोई 21 साल है. मेरे माता पिता सामान्य वर्ग से संबंध रखते हैं और हमारी फैमिली एक साधारण फैमिली है. मेरे माता पिता ने मुझे बहुत ही अच्छी शिक्षा दिलवाई. मैं बचपन […]

Full Story >>>

मम्मीजी आने वाली हैं-2

जब से मैं और पिंकी पकड़े गये थे तब से मैं उनके घर नहीं जाता था, मगर अब तो मैंने उनके घर भी जाना शुरु कर दिया। हालांकि पिंकी की मम्मी यानि स्वाति भाभी की सास मुझे अब भी पसंद […]

Full Story >>>